ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

मृणाल पाण्डे कृत 'दरम्यान' कहानी संग्रह में पारिवारिक संवेदना

KEY WORDS:

गुरपाल राम

एम.ए.(हिन्दी), एम.एड., यू.जी.सी. नैट (हिन्दी), गांव व पोस्ट आफिस साहूवाला प्रथम, तहसील व जिला सिरसा–125077

विश्व भर में सभी सामाजिक संस्थाओं में से परिवार एक अनिवार्य, उत्तम, आदर्श तथा महत्त्वपूर्ण सर्वव्यापक सामाजिक संस्था है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का कुछ न कुछ समय अवश्य व्यतीत होता है। शारीरिक, धार्मिक, आर्थिक तथा भौतिक कार्यों की सम्पन्नता के कारण परिवार सर्वव्यापी बनता है। परिवार में सदस्य मूल भावों, प्रवृत्तियों तथा संवेगों के द्वारा एक दूसरे से सम्बद्ध होते हैं । प्रत्येक परिवार की व्यवस्था इन भावों के वातावरण पर आश्रित हैं जैसे : सहानुभूति, प्रेम, सेवा के भाव इत्यादि । इन भावों के कारण परिवार के सदस्यों में आपसी लगाव होता है और उनके मध्य में एक अटूट रिश्ता स्थापित हो जाता है। भावात्मक सम्बन्ध के कारण ही मनुष्य अपनी परेशानियों को भूल जाता है । ऐसे सम्बन्धों के अभाव में परिवार विघटित हो जाते हैं । अतः भावात्मक सम्बन्ध परिवार का मूल आधार होता है।

मृणाल पाण्डे कृत 'दुर्घटना' उन आधुनिक लोगों की कहानी है जिनके लिए रिश्तेदार कोई मायने नहीं रखते। गांव में जन्मे दो भाई अपनी मां के विरोध के कारण शहर आए, क्योंकि मिडिल पास मां चाहती थी कि उसके बच्चे भी फर्राटे से अंग्रेजी बोलें तथा लिखें।

''वे हमेशा हमें अंग्रेजी अख्बार–रिसाले पढ़ने और सही उच्चारण में अंग्रेजी बोलने की हिदायतें दिया करती थी, मय कई उदाहरणों के, जो उनके अंग्रेजी परस्त रिश्तेदारों की निर्बाध तरक्कियों वाले उजले जीवन से सम्बद्ध होते थे।''[1]

बड़ा बेटा पढ़–लिख कर एक अमीर लड़की से शादी कर लेता है। छोटा पिता के साथ ही रहता है। उनके पिता अपने बड़े बेटे की गाड़ी से टकराकर मर जाते हैं। छोटा बेटा जब यह बताने बड़े भाई के घर जाता तो भाभी उसे पहचानने से इंकार कर देती हैं। इतना ही नहीं, उसे यह जानकर भी दुःख नहीं होता कि पिता की मृत्यु उनकी गाड़ी से हुई। इसके विपरित कहती है –''तो वे आपके फादर थे? बताइए तो भला उतनी रात बिना पैदल पारपथ के चलती सड़क पर उन्होनें हरी बत्ती पर कैसे पार की? पुलिस का भी यही कहना था। वैरिइरिंसपासिबुल। हमारी कार का तो मरगार्ड काफी पिचक भी गया, पर हमने सोचा कि छोड़ो भी, अब जरा–जरा सी चीज का हर्जाना क्या भरवायें''[2] अन्त में छोटा बेटा अपने पिता की परछाई के साथ वापिस आ जाता हैं। इस कहानी में दिखाया है कि मां–बाप अपने बच्चों की खातिर क्या कुछ नहीं करते, परन्तु नई पीढ़ी के लिए रिश्तों की कोई अहमियत नहीं हैं।

'आततायी' कहानी एक ऐसे परिवार की है जिसमें दादा–दादी, ताऊ–तायी सब रहते। घर में ताऊ जी का बड़ा रौब है। बड़े से लेकर छोटे तक उनका कहा मानते। परिवार का एक सदस्य नरेश विलायत पढ़ने जाता, तो वही शादी कर लेता यद्यपि उसके घरवालों ने एक अमीर लड़की भारत में पसन्द कर रखी थी। इसके बावजूद ताऊ जी कुछ नहीं कहते और जो लड़की भारतीय रीति–रिवाज नहीं जानते उसे अपना लेते हैं। ताऊ जी एक बेटी की शादी कम उम्र में एक विधुर से हो जाती हैं। पूरी कहानी में सास नयी आई बहू का मजाक उड़ाती है ''काहे उस पर छ–सात सौ की साड़ी बारें?'' इन लोगों की शादियों का क्या ठिकाना कि कब तक टिके?''[3]

नरेश भाई अपने साथ कैमरा लाते है, व सबकी फोटों खींचते हैं। फिर वह अपनी पत्नी के साथ बाजार चले जाते है, क्योंकि उन्हें कुछ सामान खरीदना हैं। इसी के साथ कहानी खत्म हो जाती हैं।

'कगार पर' कहानी बि णु नामक ऐसे पुरू ा नामक ऐसे पुरू ा की है जो एक विदेशी लड़की से विवाह करके विदेश में ही बस गया। उसकी पत्नी यद्यपि एक समझदार, अनुशासनप्रिय स्त्री है, परन्तु वह अपने पति से ज्यादा अपने माता–पिता को महत्व देती है। उसके दोनों बेटे उसी का कहा मानते, न कि पिता का । मैथ्यू औ एलैक की खेलते हुए जब गेंट स्टड़ी रूप में गिरती है तो उन्हें पिता का कोई डर नहीं –

''मैथ्यू।''
''क्या? हमारी गेंद खो गयी है। देखा कहीं?''
''उधर नहीं, इधर है स्टड़ी में।''
''तो पहले क्यों नहीं बताया? खरगोश, की तरफ उछल कर छोटा गेंद लेने आ घुसा।
''देखो, खिड़की के इतने पास...''

''येऽऽ'' एलैक ने खिड़की से गेंद मैथ्यू की ओर फेंकी और वहीं से कूद कर यह जा, वह जा। वह फालतू–सा कुछ देर यूं ही खड़ा रहा।''[4]

वि णु को हर रविवार भारत से किसी का फोन आता। उसे इस बात का शुक्र रहता हैं कि उस समय मिली सोई रहती। वह उसे उसकी माता तथा परिवार वालों के बारे में बताता रहता। अश्लील किताबें पढ़ते हुए वि णु जब मैथ्यु को देखता तो चाह कर भी कुछ नहीं कर पाता, उल्टा उसे ही मिली कहती है कि मैथ्यू अब बड़ा हो चुका है, उससे पूछकर जाना चाहिए तथा कमरे में। धीरे–धीरे उसने बुराइयाँ आती गई। शराब पीने लगा और बदहवास हरकतों से परेशान करता। इन सबका परिणाम यही हुआ। मिली के शब्दों में –''सो बदरहाल हमें समय रहते एक–दूसरे तथा बच्चों के भले के लिए अलग ही जाना चाहिए। जितनी जल्दी से उतना ही बेहतर। जिसे लेकर हम दुःखी या भावुक हो सकते थे, वह बात रही है तब इस सबमें....उसने अपनी भुजा से घर का आकार लपेट में लिया, 'कोई तुक नहीं रह जाता।''[5] और दोनों तलाक ले लेते हैं। मिली दोनों बच्चों के साथ मां के पास चली जाती हैं। वि णु इस सबको सहन नहीं कर पाता और आत्म हत्या कर लेता हैं।

'दरम्यान' कहानी मनोहर और बिहारी नाम से दो दोस्तों की है जो पैसा कमाने विदेश जाते, धीरे–धीरे वहीं के हो जाते हैं। दोनों किराये पर रहते हैं। दोनों किराये पर रहते हैं। बिहारी लापरवाह तथा आशिक मिजाज का है और अपना वेतन यूं ही गवा देता हैं पर मनोहर के ऊपर उसकी मां तथा तीन बहनों की जिम्मेवारी हैं। कहानी में विवाहित स्त्रियों की समस्याएं भी प्रस्तुत हुई हें। मनोहर बहन शीला जो निड़र स्वाभिमानी थी, शादी के बाद पूरी तरह बदल जाती हैं। ''शायद उसने अपनी सारी अनुभूतियों और चेतना–तन्तुओं को ऐसा भीतर सिकोड़ लिया है कि आदर–अपमान, दुख–सुख किसी का भी उस पर असर नहीं होता। दिन आते हैं और चले जाते हैं, पर उसकी जिन्दगी का ढर्रा वहीं रहता हैं, चाहे हिन्दुस्तान में हो या दस हजार मील दूर कहां पर। पति के चिल्लाने–खखारने के साथ उस का दिन शुरू होता है और उसी के खर्राटों के साथ खत्म, बीच में कहीं बच्चों, खानों, मसालों, धुलाई के कपड़ों और पोंछी जाने वाली धूल की परतों का एक विराट अम्बार है, जिसे जैसे–तैसे निबटाना भी उसकी निजी जिम्मेदारी हैं।''[6]

मनोहर की मां का भी मानना हैं कि औरतों को केवल घर का काम ही देखना चाहिए। उसकी दो अन्य बहनें भी शादी के लायक हैं। बड़ी बहन तो बच्चों समेत उसके पास आ जाती है। इन सब चक्करों में मनोहर शादी भी नहीं कर पाता, जबकि बिहारी शादीशुदा है और उसका मानना हैं कि औरतों को कपड़ा लत्ता, बच्चे मिल जाएं इसी में वे खुश रहती हैं। इसके विपरित ऐसा नहीं कर पाता और जिम्मेदार निभाने में लगा रहता हैं।

''कैंसर' कहानी में दामोदार और उसकी पत्नी सुर जी का चित्रण हैं। सुरजी जब से ब्याह कर घर आती तभी से उसकी का ही पक्ष लेती है, जिससे उसका पति दामोदार उसकी उपेक्षा करने लगता है। इसमें पुरानी यादों के माध्यम से सास–बहु रूप का भी चित्रण किया है। बुआजी एक ऐसा पात्र है जो कहानी में उपस्थित न होते हुए भी हर समय मौजूद हे। उनका डर परिवार के हर समय में समाया था । दामोदर और उसकी बहन बिटनिया के ये शब्द यही दिखाते हैं–'कहें बुआ जी से?'' दामोदर कीचड में पांव फचकचाता है। बिटनिया की बडी–बड़ी भूरि आंखे गहरे डर से काली होती जाती है।

विद्या माई की कसम भैया, अम्मा को मत बोलना, अब नहीं कहेंगे।''[7]

आगे चलकर दामोदर को कैंसर हो जाता है। सास मरने के बाद सुरज भी सास बन जाती है, परन्तु उसकी बहुएं नए जमाने की है वे अलग रहती है तथा नौकरी करती है और बेटे भी केवल पैसा देकर रिश्ता निभा देते है। बहू से नाराजगी सके इन शब्दों से दिखती है। बड़े बेटे से कहती है ––'बहू तो चली गयी काम पर? प्रश्न में जिज्ञासा कम, शिकायत अधिक है।[8] बहू की नौकरी उन्हें कभी नहीं भाती। अस्पताल में सुरजी अपने पति की सेवा करती है, परन्तु वह जानती हैं कि कैंसर लाईलाज बिमारी है। दामोदर भी स्वयं को असहाय या महसूस करते हैं और इस जिन्दगी से मर जाना पसंद करते है।

'धूप छांह' कहानी एक असहाय विधवा की है जो अकेली रहती है। उसका बेटा भी उसके पास नहीं रहता। एक बार रोटी मांगने आए लड़के को ही अपने यहां रख लेती है। यह तिलुवा भी घर नहीं जाना चाहता क्योंकि उसकी सौतेली मां उस पर अत्याचार करती है। परन्तु पड़ोस के लड़कों के साथ रहकर भी वह बिगड़ चुका है। बेटा वहां रहकर अपने पुराने दिनों को याद करता है तथा निराश होता है। ''पता नहीं नाराजगी घर खाली होने के प्रति थी या चीजों के हाथ से निकल जाने के बारे में। उसने करवट बदली। बाहर सब चुप था। आंगन के पार बस जमीर के पेड़ की पतियों की उदास सुरसराहट भर थी और टपकते नल की हल्की आवाज छत पर कांपती बेड़ोल परछाईयों को देखते–देखते उसे लगने लगा, जैसे कि एक चिरपरिचित घर में नहीं, बल्कि किसी पुरानी उजाड़ सराज के अजनबी कमरे में लेटा हो।''[9] अंत में जब सुबह वह जाता है तो उसकी मां उसके लिए आलू–पु ए बनती है तथा उसे कुछ पैसे भी देती है जिसे लेते हिचकिचाहट होती हैं वह कहत है 'ले–ले, शगुन का है। कौन ज्यादा दे रही हूं। जा रे तिलुवा, सामान गाड़ी में रखा दें।''[10] और अंत में उसे ओझल होने तक देखती रहती है।

'तुम और वह और वे' कहानी एक ऐसी पति–पत्नी की है जिनके घर मेहमान आते हैं। मेजबान महिला शादी से पहले जिस पुरू ा से प्रेम करती है पर किसी कारणवश उससे शादी नहीं हो पाती। बाद में उसकी भी मंजू नाम की लड़की से शादी हो जाती हैं। आज वहीं दोनों उसके घर मेहमान बनकर आते है। उनके आने से पहले वह अपने को संवारती, घर में हर चीज ठीक से रखती, पंसद का खाना बनाती हैं। परन्तु उनके आने पर सहज नहीं हो पाती। उसकी पत्नी से ई र्या सी करने लगती है तथा उसके पति को जतलाना चाहती है कि बेशक उसकी शादी उससे नहीं हुई परन्तु फिर भी वह खुश है। उसका पूर्व प्रेमी भी यहीं दिखलाता हैं कि वह अपनी पत्नी के साथ खुश हुई है। उसके यह पूछने पर कि सफर कैसा रहा तो पूर्व प्रेमी अच्छा कहता है ''पर भाई, अपने शहर की सड़कों का कुछ कराओ। धक्के खाते–खाते तो मंजू एक दम निढ़ाल हो गई क्यों? वह बड़े लाड से अपनी बीवी की ओर देखकर मुस्काराता हैं'' यह सब देखकर उसका मन करता है कि चप्पल की नोंक उसे उसके टखने पर हल्की ठोकर दे मारे, पर परिस्थितियां बदल चुकी है। चाहते हुए भी असमर्थ पाती हैं खुद को। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी से बने दिखाई देते है जो एक दूसरे को नीचा दिखाना चाहते है।

निष्कर्ष:

कहा जा सकता है कि मृणाल पाण्डे की कहानियों में यही शिक्षा दी है कि घर से सम्बन्धित क्रियाओं को सफलतापूर्वक ढंग से संगठित कर उनका प्रयोग करने से रहन सहन के स्तर में वृद्धि होती है । अतः सन्तोष तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिए उसे अपने ज्ञान, विवेक, अनुभव और कुशलता का ढंग से प्रयोग करना चाहिए । सीमित आय से अत्याधिक उपयोगिता तथा सन्तुष्टि प्राप्ति के लिए उसे सम–सीमांत–उपभोक्ता नियमों का पालन करना चाहिए । ऐसा करने से अनिश्चित तथा आकस्मिक समय के लिए कुछ धन बचाया जा सकता है । आवश्यकताओं की

पूर्ति तथा सदस्यों के विकास के लिए साधनों का संगठन आवश्यक है ।

सन्दर्भ

1. मृणाल पाण्डे 'दरम्यान' पृ0 159
2. मृणाल पाण्डे 'दरम्यान' पृ0 159
3 मृणाल पाण्डे 'दरम्यान' पृ0 159
4 मृणाल पाण्डे 'दरम्यान' पृ0 159
5 मृणाल पाण्डे 'दरम्यान' पृ0 159
6. मृणाल पाण्डे 'दरम्यान' पृ0 159
7 मृणाल पाण्डे 'दरम्यान' पृ0 159
8. मृणाल पाण्डे, दरम्यान, पृ.150
9 मृणाल पाण्डे, दरम्यान, पृ.150
10. मृणाल पाण्डे 'दरम्यान' पृ0 83
11 मृणाल पाण्डे, दरम्यान पृ.102